

पूर्व की ओर प्रवाहति नदियाँ सूखाग्रस्त

प्रलम्ब के लिये:

[पूर्व और पश्चिम की ओर प्रवाहति नदियाँ, गंगा नदी तंत्र, प्रायद्वीपीय नदियाँ](#)

मेन्स के लिये:

[पूर्व एवं पश्चिम की ओर प्रवाहति नदियों में अंतर, सूखा, जल संकट और प्रबंधन](#)

[स्रोत: डाउन टू अर्थ](#)

चर्चा में क्यों?

[केंद्रीय जल आयोग \(Central Water Commission - CWC\)](#) द्वारा जारी आँकड़ों के विश्लेषण के अनुसार, [महानदी](#) और पेन्नार के बीच पूर्व की ओर बहने वाली कम से कम 13 नदियों में इस समय जल नहीं है।

भारत में पूर्व की ओर प्रवाहति होने वाली नदियों पर क्या संकट है?

- **पूर्व की ओर प्रवाहति नदियों के बेसिन में जल संकट:**
 - महानदी और पेन्नार के बीच पूर्व की ओर प्रवाहति कम से कम 13 नदियों में इस समय पानी नहीं है, जिनमें रुशकिल्या, बाहुदा, वंशधारा, नागावली, सारदा, वराह, तांडव, एलुरु, गुंडलकम्मा, तम्मल्लिरु, मुसी, पलेरु व मुनेरु शामिल हैं।
 - ये नदियाँ आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और ओडिशा राज्यों से होकर सीधे **बंगाल की खाड़ी** में गिरती हैं।
 - इस वर्ष बेसिन में भंडारण का स्तर लगातार घट रहा है, 21 मार्च को शून्य तक पहुँच गया, जबकि पिछले वर्ष इसी समय क्षमता का 32.28% थी।
- **अन्य नदी बेसिनों में जल संकट:**
 - पेन्नार और कन्याकुमारी के बीच [कावेरी](#), पेन्नार और पूर्व की ओर प्रवाहति होने वाली नदियों भी कम या अत्यधिक कमी वाले जल भंडारण का सामना करना पड़ सकता है।
 - देश के सबसे बड़े बेसिन [गंगा बेसिन](#) में इसकी कुल क्षमता का आधे से भी कम जल भंडारण दर्ज किया गया है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में कम है।
 - [नर्मदा, तापी, गोदावरी, महानदी और साबरमती नदी](#) घाटियों में भी उनकी क्षमता के सापेक्ष भंडारण स्तर दर्ज किया गया है।
- **राष्ट्रीय जल संकट:**
 - भारत के 150 [प्रमुख जलाशयों](#) में उनकी कुल क्षमता का केवल 36% जल भंडारण है, जबकि कम से कम छह जलाशयों में कोई जल भंडारण नहीं है।
 - गंगा बेसिन पर स्थिति 11 राज्यों के लगभग 286,000 गाँवों में जल की उपलब्धता में गिरावट देखी जा रही है।
 - कुल मिलाकर, देश का कम से कम 35.2% क्षेत्र असामान्य से असाधारण स्तर तक [सूखे](#) के अधीन है, 7.8% अत्यधिक सूखे की स्थिति में एवं 3.8% असाधारण सूखे के अधीन है।
 - [कर्नाटक तथा तेलंगाना](#) जैसे राज्य वर्षा की कमी के कारण सूखे एवं सूखे जैसी स्थितिका सामना कर रहे हैं।

INDIA

Rivers of India



*Map not to be scale

//

केंद्रीय जल आयोग(CWC):

- केंद्रीय जल आयोग जल संसाधनों के विकास के लिये देश का सर्वोच्च तकनीकी संगठन है और साथ ही यह जल संसाधन मंत्रालय से भी संबद्ध है।
- आयोग राज्य सरकारों के परामर्श से संचाई, बाढ़ प्रबंधन, वदियुत उत्पादन, नेवगिशन आदिके प्रयोजनों हेतु विश्व के जल संसाधनों के नयितरण, संरक्षण, विकास एवं उपयोग के लिये योजनाएँ शुरु करने, समन्वय करने और आगे बढ़ाने के लिये उत्तरदायी है।

पूरव तथा पश्चमि की ओर बहने वाली नदियों के बीच अंतर:

पूर्व की ओर बहने वाली नदियों के सूखने के कारण क्या हैं?

- वनों की कटाई तथा मृदा अपरदन: नदी के किनारे एवं जलग्रहण क्षेत्रों में वनों की कटाई से मृदा की जल को बनाए रखने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे भूजल पुनर्भरण कम हो जाता है और साथ ही नदी का प्रवाह भी कम हो जाता है।
- जलवायु परिवर्तन: अनियमित वर्षा तथा ताप वृद्धि सहित बदलते मौसम के कारण नदियों का प्रवाह प्रभावित होता है। जलवायु परिवर्तन के कारण लंबे समय तक सूखा पड़ सकता है, जिससे नदियों में जल का प्रवाह कम हो सकता है।
- बाँधों का निर्माण: बाँधों के निर्माण एवं संचाई परियोजनाओं हेतु जल प्रवाह में परिवर्तन से भी नदियों का बहाव कम हो गया है, जिससे नदी के प्राकृतिक प्रवाह प्रणाली एवं पारस्थितिकी तंत्र प्रभावित हुए हैं।
 - औद्योगिक, कृषि और घरेलू कचरे के साथ-साथ जलकुंभी जैसी आक्रामक प्रजातियों से जल प्रदूषण एवं नदी के जल की गुणवत्ता खराब होती है, साथ ही जलीय जीवन एवं समग्र नदी स्वास्थ्य को भी हानि पहुँचती है।
- रेत खनन: नदी तल पर अनियंत्रित रेत खनन ने नदी के प्रवाह को बाधित कर दिया है और साथ ही इसे कटाव का कारण बना, जिससे नदी का अधिकांश भाग सूख जाते हैं।
- शहरीकरण और अतिक्रमण: शहरी वसति और नदी तटों पर अतिक्रमण ने नदियों के प्राकृतिक प्रवाह को बदल दिया है तथा नदी के लिये जल की उपलब्धता सीमित कर दी है।
- जागरूकता और संरक्षण प्रयासों का अभाव: नदी संरक्षण के महत्त्व के बारे में सीमित जागरूकता और प्रभावी संरक्षण उपायों का अभाव इन नदियों के सूखने में योगदान करते हैं।

नदियों के सूखने की समस्या के समाधान के लिये क्या उपाय आवश्यक हैं?

- जल संरक्षण के उपाय: वर्षा जल संचयन, वाटरशेड प्रबंधन और मृदा की नमी संरक्षण जैसी जल संरक्षण तकनीकों को लागू करने से भूजल को फरि से भरने में सहायता मिल सकती है।
 - इससे नदी के जल पर निर्भरता कम हो जाएगी, जिससे नदियों में जल का न्यूनतम प्रवाह बनाए रखने में सहायता मिलेगी।
- कुशल संचाई पद्धतियाँ: किसानों को ड्रिप संचाई और स्प्रिंकलर संचाई जैसी कुशल संचाई पद्धतियों को अपनाने के लिये प्रोत्साहित करने से जल की बर्बादी को कम किया जा सकता है तथा जल संसाधनों का स्थायी उपयोग सुनिश्चित किया जा सकता है।
- वनीकरण और वनस्पति आवरण: वनीकरण और पुनर्वनीकरण के माध्यम से वनस्पति आवरण बढ़ाने से मृदा के कटाव को कम करके तथा भूजल पुनर्भरण को बढ़ाकर नदी के प्रवाह को बनाए रखने में सहायता प्राप्त हो सकती है।
- भूजल नषिकरण का वनियमन: भूजल नषिकरण पर कठोर नियम लागू करने से नदियों के आधार प्रवाह को बनाए रखने और उन्हें सूखने से रोकने में सहायता प्राप्त हो सकती है।
- नदियों को आपस में जोड़ना: जल-समृद्ध क्षेत्रों से अधिशेष जल को जल की कमी वाले क्षेत्रों में स्थानांतरित करने के लिये नदियों को जोड़ने की व्यवहार्यता का पता लगाने से नदी के प्रवाह को बनाए रखने में सहायता मिल सकती है। उदाहरण के लिये केन-बेतवा नदी लिके परियोजना।
- सामुदायिक भागीदारी: जल प्रबंधन और संरक्षण प्रयासों में स्थानीय समुदायों को शामिल करने से जल संसाधनों का सतत उपयोग सुनिश्चित किया जा सकता है तथा नदी के प्रवाह को बनाए रखा जा सकता है।
- नीति सुधार: स्थायी जल प्रबंधन प्रथाओं को बढ़ावा देने और जल उपयोग को वनियमित करने के लिये नीतित्त सुधारों को लागू करने से नदियों के सूखने से निपटने में सहायता मिल सकती है।
- अनुसंधान और विकास: जल संरक्षण और प्रबंधन के लिये नई प्रौद्योगिकियों एवं प्रथाओं के अनुसंधान व विकास में निवेश करने से समस्या से निपटने के लिये नवीन समाधान खोजने में सहायता प्राप्त हो सकती है।

नषिकरण:

- कई नदी घाटियों में कुल भंडारण स्तर वर्तमान में पछिले पाँच वर्षों के औसत की तुलना में 'सामान्य से बेहतर' या 'सामान्य' बताया गया है, यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि इन घाटियों के भीतर कुछ क्षेत्र गंभीर से अत्यधिक सूखे की स्थिति से जूझ रहे हैं।
- यह असमानता विशेष रूप से कृषि, आजीविका और प्रभावित क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक ढाँचे पर इसके प्रतिकूल प्रभावों के कारण चिंताजनक है।
- सूखे की इन स्थितियों के प्रभाव को कम करने तथा प्रभावित समुदायों के हित की रक्षा के लिये तत्काल और लक्षित हस्तक्षेप आवश्यक हैं।

दृष्टिभेन्स प्रश्न:

प्रश्न. पूर्व की ओर प्रवाहित वाली नदियों के सूखने से उत्पन्न जल संकट के प्रभाव का परीक्षण कीजिये। साथ ही इन संकटों से निपटने के उपायों और सतत जल प्रबंधन हेतु उनके नहितार्थों का भी उल्लेख कीजिये।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

?????????:

प्रश्न. नर्मदा नदी पश्चिम की ओर बहती है, जबकि अधिकांश अन्य बड़ी प्रायद्वीपीय नदियाँ पूर्व की ओर बहती हैं। क्यों? (2013)

1. यह एक रेखीय भ्रंश घाटी पर स्थिति है।
2. यह वधिय और सतपुड़ा के बीच प्रवाहति होती है।
3. भूमिका ढाल मध्य भारत से पश्चिम की ओर होता है।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग करके सही उत्तर चुनिये:

- (a) केवल 1
- (b) 2 और 3
- (c) 1 और 3
- (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: (a)

प्रश्न. नमिनलखित कथनों पर वचिार कीजिये: (2009)

1. केरल में पूर्व की ओर प्रवाहति होने वाली कोई नदियाँ नहीं हैं।
2. मध्यप्रदेश में पश्चिम की ओर प्रवाहति होने वाली कोई नदियाँ नहीं हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (d)

??????:

प्रश्न. सूखे को उसके स्थानिक वसितार, कालिक अवधि, मंथर प्रारंभ और कमजोर वर्गों पर स्थायी प्रभावों की दृष्टिसे आपदा के रूप में मान्यता दी गई है। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) के सतिंबर, 2010 के मार्गदर्शी सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रति करते हुए, भारत में एल-नीनो और ला-नीना के संभावति दुष्प्रभावों से नपिटने के लिये तैयारी की कार्यवधियिों पर चर्चा कीजिये। (2014)